अपीलीय आपराधिक

रंजीत सिंह सरकारिया और एम. आर. शर्मा के समक्ष, न्यायमूर्ति

नगर समिति, अंबाला *शहर, अपीलकर्ता*

बनाम

मोहन लाल-प्रतिवादी

1969 की आपराधिक अपील संख्या 410

15 मई, 1972।

पंजाब नगरपालिका अधिनियम (1911 का III)-धारा 121-एक खुदरा विक्रेता की दुकान में रखे गए बांस और बांस की छड़ें-क्या "लकड़ी" जैसा कि धारा 121 में उपयोग किया गया है और क्या वे "खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री" के विवरण में आते हैं।

यह अभिनिर्धारित किया गया कि पंजाब नगरपालिका अधिनियम, 1911 की धारा 121 की मद संख्या 5 में प्रयुक्त 'लकड़ी' शब्द 'चारकोल' शब्द की प्रक्रिया करता है और इसका प्रयोग खुरदरे लट्ठों आदि को निरूपित करने के अर्थ में किया गया है। जिनका उपयोग आम तौर पर ईंधन लकड़ी के रूप में किया जाता है। तैयार बांस की छड़ियों को लकड़ी के रूप में अलग नहीं किया जा सकता है। ऐसे मामलों में लागू किया जाने वाला परीक्षण यह है कि क्या एक आम आदमी बांस को लकड़ी के रूप में वर्णित करेगा या नहीं। दंडात्मक कानून में उपयोग किए गए शब्दों को उस परिवेश में पढ़ा जाना चाहिए जिसमें वे होते हैं और उन्हें व्यापक अर्थ नहीं दिया जा सकता है ताकि अपराध का दायरा बढ़ाया जा सके। अतः खुदरा विक्रेता की दुकान में रखे गए बांस और बांस की छड़ें अधिनियम की धारा 121 में प्रयुक्त 'लकड़ी' शब्द के विवरण के अंतर्गत नहीं आते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सूखे बांस में आसानी से आग लग जाती है, लेकिन कानून केवल ज्वलनशील सामग्री के भंडारण को प्रतिबंधित नहीं करता है। निषेध केवल "खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री" पर लागू होता है। विवरण केवल पेट्रोल, ईथर, अल्कोहल और ऐसे अन्य रसायनों पर लागू होता है जो आग लगने पर तुरंत आग की लपटों में जाने की संभावना रखते हैं। बांस या बांस की छड़ें "खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री" के विवरण में नहीं आती हैं। (para 4)

श्री सी डी वशिष्ठ, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, अंबाला, दिनांक 30 मई, 1968 के आदेश से अपील, अभियुक्त को प्राप्त करना।

पंजाब नगरपालिका अधिनियम, 1911 की धारा *121 के* तहत आरोप।

अपीलकर्ता के लिए *के.पी.एस. संधू, अधिवक्ता।*
प्रतिवादी की ओर *से गुरमुख सिंह चावला, एडवोकेट।*

निर्णय

शर्मा, जे -यह 30 मई, 1968 के उस आदेश के खिलाफ अपील है, जिसे अंबाला के प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट ने पारित किया था, जिसमें प्रतिवादी मोहन लाल को पंजाब नगर निगम अधिनियम, 1911 की धारा 121 के तहत अपराध से बरी कर दिया गया था। (इसके बाद अधिनियम कहा जाएगा).

(2) प्रतिवादी को अंबाला शहर के बाजार नोहरियन में अपनी दुकान वाले बांस का विक्रेता कहा जाता है। अंबाला शहर की नगरपालिका समिति के श्री जोगिंदर सिंह और श्री कुंदन लाल ने विद्वान न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष निम्नलिखित शिकायत दर्ज कीः -

"अंबाला शहर की नगर समिति की ओर से यह प्रस्तुत किया गया है कि आरोपी 27 जनवरी, 1965 को अंबाला शहर की नगर समिति की नगर सीमा के भीतर बिना लाइसेंस के बांस बेच रहा था। उक्त अभियुक्त ने पंजाब नगरपालिका अधिनियम, 1911 की धारा 121 के तहत दंडनीय अपराध किया है। इसलिए, कृपया उसे उचित सजा दी जाए। "

विद्वत विचारण न्यायालय ने इस मामले की सुनवाई समन मामले के रूप में की। प्रत्यर्थी को दिए गए नोटिस को उसे समझाया गया और जब उससे पूछताछ की गई तो उसने आरोप के लिए दोषी नहीं होने का अनुरोध किया। इसके बाद, अभियोजन पक्ष ने चार गवाहों से पूछताछ की। श्री कुंदन लाई अभियोजन पक्ष के गवाह 1, पैरोकर ने केवल इतना कहा कि वह नगर समिति की ओर से शिकायत दर्ज करने के लिए अधिकृत थे और यह उनके हस्ताक्षर के तहत था। आसा नंद अभियोजन पक्ष के गवाह 2, लाइसेंस क्लर्क ने कहा कि नगर समिति ने बांस बेचने के लिए लाइसेंस शुल्क के रूप में 10 रुपये तय किए थे। प्रत्यर्थी ने यह शुल्क नहीं दिया। अभियोजन पक्ष के गवाह 3, चिकित्सा अधिकारी स्वास्थ्य, ने कहा कि उन्होंने प्रतिवादी की दुकान का निरीक्षण किया जिसमें उन्होंने बेचने के लिए बांस रखे थे। उनके अनुसार, बांस ज्वलनशील वस्तु हैं और एक दूसरे पर प्रहार करके आग पकड़ लेते हैं। जिरह में, उन्होंने स्वीकार किया कि प्रतिवादी ने किसी भी भट्टी का निर्माण नहीं किया था, जिसका उपयोग आम तौर पर बांस के विक्रेताओं द्वारा बांस को सीधा करने के लिए

किया जाता है। ननती। अभियोजन पक्ष के गवाह 4 ने अंबाला शहर में आग की घटनाओं का पिछला रिकॉर्ड पेश किया था। उनके अनुसार, फर्नीचर का कारोबार करने वाले हंस राज धीमान की दुकान में 12 मार्च, 1967 को आग लग गई थी। इसी तरह, 6 मई, 1967 को एक अन्य फर्नीचर डीलर मेहताब की दुकान में आग लग गई। जब उनसे जिरह की गई तो उन्होंने स्वीकार किया कि बाजार में बांस बेचने वाले व्यापारी भट्टियों का इस्तेमाल नहीं करते थे। मामले में पूरे साक्ष्य पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, विद्वत विचारण न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि प्रतिवादी ने लकड़ी के लिए कोई यार्ड या डिपो नहीं रखा था, और न ही वह खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री में काम कर रहा था। इस निष्कर्ष के परिणामस्वरूप, प्रतिवादी को उसके खिलाफ लगाए गए आरोपों से बरी कर दिया गया था।

(3) नगरपालिका समिति, अंबाला शहर, हमारे सामने अपील में आई है। अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता श्री के. पी. एस. संधू ने तर्क दिया है कि जिस दुकान में बांस या बांस की छड़ें रखी जाती हैं, वह यार्ड या डिपो के अर्थ में आती है और बांस निश्चित रूप से लकड़ी की तुलना में अधिक ज्वलनशील होते हैं। विद्वान वकील के अनुसार, विद्वान विचारण न्यायालय ने अभियुक्त को बरी करने के आदेश को दर्ज करने में क़ानून की भाषा पर गलत व्याख्या की थी। इस विवाद से निपटने से पहले, अधिनियम की धारा 121 के प्रावधानों की जांच करना आवश्यक है, जिनके भौतिक भाग निम्नानुसार दिए गए हैं:-"121 आक्रामक और खतरनाक व्यापार का विनियमन।

(1) नगरपालिका के भीतर किसी भी स्थान का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों में से किसी के लिए नहीं किया जाएगाः -

कच्चा चमड़ा, कच्ची खाल, उबलती हड्डियां, ऑफल या खून; एक साबुन घर, तेल-उबलते घर, रंगाई घर या चमड़ा उद्योग के रूप में; एक ईंट के खेत, ईंट-भट्ठा, लकड़ी का कोयला-भट्ठा, मिट्टी के बर्तन या चूने के भट्टे के रूप में; किसी भी अन्य कारखाने, इंजन-घर, भंडार-घर या व्यवसाय के स्थान के रूप में जिससे आपत्तिजनक या अस्वास्थ्यकर गंध, गैस, शोर या धुआं उत्पन्न होता है; बिना स्लेक्ड चूने, घास, पुआल, छप्पर घास, लकड़ी का चारकोल या कोयला, या अन्य खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री के व्यापार के लिए एक यार्ड या डिपो के रूप में; किसी भी विस्फोटक, या पेट्रोलियम या किसी भी ज्वलनशील तेल या आत्मा के लिए एक भंडार-घर के रूप में; समिति से एक लाइसेंस के तहत छोड़कर जो सालाना नवीनीकृत होगाः

बशर्ते कि ऐसे किसी भी परिसर के मामले में ऐसा कोई लाइसेंस आवश्यक नहीं होगा जिसका उपयोग पंजाब नगर निगम अधिनियम, 1891 के लागू होने के समय ऐसे किसी उद्देश्य के लिए किया गया था और जो उस अधिनियम के तहत पंजीकृत थे और ईंटों के खेतों के मामले में, जिनका उपयोग उस समय किया गया था जब यह अधिनियम लागू हुआ था; लेकिन इस तरह अपेक्षित ईंटों के खेतों का मालिक या कब्जा करने वाला इसे समिति द्वारा इस उद्देश्य के लिए रखी जाने वाली पुस्तक में पंजीकृत करेगा।

यह धारा अधिनियम के अध्याय IX में दिखाई देती है और खतरनाक या आपत्तिजनक व्यापारों से संबंधित धाराओं के समूह से संबंधित पहली धारा है। इस खंड को सरसरी तौर पर पढ़ने से पता चलता है कि व्यावहारिक रूप से व्यापार की सभी छह वस्तुएं जिनके लिए लाइसेंस प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, खतरनाक प्रकृति की हैं। इस मामले में, हालांकि, हम आइटम नंबर 5, यानी लकड़ी या अन्य खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री के व्यापार के लिए एक यार्ड या डिपो से संबंधित हैं। इस मद की व्याख्या करने के लिए, हम इस धारा द्वारा परिकल्पित निषेध की सामान्य प्रकृति को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह मद अधिनियम की धारा 121 में उल्लिखित अन्य मदों से कुछ रंग प्राप्त करती है। इस अधूरे चूने का व्यापार प्रतिबंधित है क्योंकि यह पानी के संपर्क में आने पर गर्मी का उत्सर्जन करता है। घास, पुआल, फूस की घास, लकड़ी, लकड़ी का कोयला या कोयला आदि भी ज्वलनशील पदार्थ हैं और यदि पर्याप्त मात्रा में संग्रहीत किया जाता है तो आकस्मिक आग के कारण खतरा बढ़ जाता है। यह ठीक इसी कारण से है कि क़ानून ने अधिनियम की धारा 121 की मद संख्या 5 में "यार्ड" या "डिपो" शब्दों का उपयोग किया है। यार्ड या डिपो एक बड़े क्षेत्र को दर्शाता है जिसमें माल का भंडार होता है। वाणिज्यिक भाषा में डिपो का अर्थ है एक ऐसी जगह जहां खुदरा विक्रेताओं को आपूर्ति करने के लिए बड़ी मात्रा में सामान संग्रहीत किया जाता है। चीजों की प्रकृति में एक दुकान को डिपो या यार्ड के रूप में नहीं माना जा सकता है।

(4) वस्तु संख्या 5 में प्रयुक्त "लकड़ी" शब्द "लकड़ी का कोयला" शब्द से पहले आता है और इसका उपयोग खुरदरे लट्ठों आदि को दर्शाने के अर्थ में किया गया है, जो आमतौर पर ईंधन लकड़ी के रूप में उपयोग किए जाते हैं। तैयार बांस की छड़ें निश्चित रूप से लकड़ी के रूप में वर्णित नहीं की जा सकती हैं। ऐसे मामलों में लागू किया जाने वाला परीक्षण यह है कि क्या एक आम आदमी बांस को लकड़ी के रूप में वर्णित करेगा या नहीं। दंडात्मक प्रतिमा में उपयोग

किए गए शब्दों को उस परिवेश में पढ़ा जाना चाहिए जिसमें वे होते हैं और उन्हें व्यापक अर्थ नहीं दिया जा सकता है ताकि अपराध का दायरा बढ़ाया जा सके। हमारा मानना है कि खुदरा विक्रेता की दुकान में रखे गए बांस और बांस की छड़ें अधिनियम की धारा 121 में उपयोग किए गए "लकड़ी" शब्द के विवरण के अंतर्गत नहीं आते हैं।

(5) तब अपीलार्थी के विद्वान वकील द्वारा यह सुझाव दिया गया कि प्रतिवादी की दुकान पर रखी गई बांस की छड़ें और कोयला खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री के विवरण का उत्तर देते हैं। हम इस तर्क में कोई सार भी नहीं पाते हैं। शॉर्टर ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार, "ज्वलनशील" शब्द को 'सूजन में सक्षम; दहन के लिए अतिसंवेदनशील; आसानी से आग लगाने में सक्षम' के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सूखे बांस में आसानी से आग लग जाती है, लेकिन कानून केवल ज्वलनशील सामग्री के भंडारण को प्रतिबंधित नहीं करता है। निषेध केवल "खतरनाक रूप से ज्वलनशील सामग्री" पर लागू होता है। हमारी राय में, पेट्रोल, ईथर, अल्कोहल और ऐसे अन्य रसायन जो आग लगने पर तुरंत आग की लपटों में जाने की संभावना रखते हैं, केवल इस विवरण का उत्तर दे सकते हैं।

(6) पूरे मामले पर सावधानीपूर्वक विचार करने पर, हमारा विचार है कि विद्वत विचारण न्यायालय उचित रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि किसी दुकान में बांस की छड़ियों और छोटे खंभों का भंडारण अधिनियम की धारा 121 की शरारत के दायरे में नहीं आता है। नतीजतन, यह अपील विफल हो जाती है और खारिज कर दी जाती है।

सरकारिया, जे -मैं सहमत हूँ।

एन.के.एस.

अस्वीकरण : स्थानीय भाषा में अनुवादित निर्णय वादी के सीमित उपयोग के लिए है ताकि वह अपनी भाषा में इसे समझ सके और किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है । सभी व्यवहारिक और आधिकारिक उद्देश्यो के लिए निर्णय का अंग्रेजी संस्करण प्रमाणिक होगा और निष्पादन और कार्यान्वयन के उद्देश्य के लिए उपयुक्त रहेगा ।

अवीषेक गर्ग
प्रशिक्षु न्यायिक अधिकारी
(Trainee Judicial Officer)
हिसार, हरियाणा